VOL- VI ISSUE-XII DECEMBER 2019 PEER REVIEW e-JOURNAL IMPACT FACTOR 5.707 ISSN 2349-638x

भूमंडलीकरण के परिप्रेक्ष्य में हिंदी भाषा का योगदान

डॉ. बबन सातपुते
सहा. प्राध्यापक, हिंदी विभाग,
मिरज महाविद्यालय, मिरज,
जिलाः सांगली (महाराष्ट्र)।

समाज, भाषा और संस्कृति एक–दूसरे के साथ अत्यधिक घनिष्ठतम् रूप में जुडे हुए हैं। किसी एक के बिना उन्हें समझना अकल्पनीय–सा ही है। वस्तुतः समाज–विशेष के परिप्रेक्ष्य में भाषा और संस्कृति को समझा, परखा जा सकता है। भाषा के इतिहास द्वारा हमें 'हिंदी', 'हिंदूस्तानी' तथा 'हिंदवी' ज्ञात होने में सहायता मिलती है। उपके संदर्भ विदित होते हैं। साथ ही 'हिंदी' और 'हिंदी भाषा' द्व अर्थों से हम भली–भाँति अवगत होते हैं। स्पष्ट होता है कि हिंदुस्तान में रहनेवालों के लिए 'हिंदी' शब्द प्रयुक्त होता है और 'हिंदी भाषा', शब्द–प्रयोग इन दोनों अर्थों में किया जाता है। भाषावैज्ञानिकीं की दृष्टि से हिंदी एक आर्यभाषा होते हुए भी एक भिन्न, विशिष्ट प्रकार की भाषा है। वह बहुक्षेत्रीय भाषा है, अर्थात् व्यापक रूप में प्रयुक्त होती है। तेरहवीं शताब्दी में अमीर खुसरो हुए। वे तुर्क थे, फिर भी खुद को हिंदी बोलनेवाला मानते थे। यह बात उन्हीं की रचना द्वारा ज्ञात होती है।

वस्तुतः हिंदी भाषा की विकास–यात्रा काफी लम्बी रही है। वह अनेक पडावों से गुजरती नजर आती हैं। विदित है कि हिंदी भाषा अनेक भाषाओं और बोलियों से प्रभावित रही है। जिसमें देश–विदेश का शास्त्र, लोक तथा शब्द–भंडार मायने रखता है। अतः हिंदी की परम्परा काफी पुरानी रही है। जैसे कि, "जो वाक् या वाणी वेद के छंदस से शुरू हुई, वह (लौकिक) संस्कृत, फिर पालि, अर्धमागधी, प्राकृत, शौरसेनी आदि से गुजरते हुए अपभ्रंश तक आयी और तब हिंदवी/हिंदी का आगमन हुआ। ऐसा अनुमान किया जाता है कि हिंदी कुल हजार, बारह सौ साल पुरानी भाषा है। आज की (खडी बोली) हिंदी तो मात्र डेढ–दो सौ वर्ष पुरानी है। यहाँ पर हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि सामाजिक वैविध्य और नाना प्रकार के प्रभावों के चलते किसी भी देश–काल में कई भाषाएँ बोली जाती रहती हैं। इन भाषाओं के बीच किसी भाषा का कार्य–कारण संबंध सुनिश्चित करना मुश्किल होता है। हिंदी भाषा पर अनेक भाषाओं और बोलियों की छाप पडी हैं। वह संस्कृत, ब्रज, अवधी, मैथिली, भोजपुरी, राजस्थानी, बुंदेली, कुमाऊँनी, हरियाणवी, दक्खिनी, मगही, कन्नौजी, छत्तीसगढी आदि से उदारतापूर्वक शब्द ग्रहण करती है। उस पर शास्त्र और लोक दोनों परम्पराओं का प्रभाव मिलता है। साथ ही अरबी, फारसी, उर्दू और अंग्रेजी जैसी विदेशी भाषाओं के भी शब्द, मुहावरे और लोकोक्तियाँ भी इसमें शामिल होती रही हैं।"[१] अतः व्यापक भाषिक–प्रयोग के रूप में हिंदी भाषा की अभिव्यक्ति दृष्टिगत होती है। तात्पर्य यह है कि संख्यात्मक दृष्टि से आज हिंदी विश्व की प्रमुख भाषाओं में एक अपनी पहचान रखती है। जिससे हिंदी भाषा की व्यापक उपस्थिति स्पष्ट होती है।

भारतीय समाज और संस्कृति का समूचे विश्व में अपना अलग स्थान हैं। वह लगभग पाँच हजार वर्ष से भी ज्यादा पुरानी होने पर गर्व करती है। वर्तमान स्थिति में उसे एक ही झटके में बदल दिया है। वस्तुतः हिंदी की वर्तमान स्थिति में कहीं न कहीं भूमंडलीकरण का योगदान रहा है। विश्लेषकों की दृष्टि से भूमंडलीकरण के मूलाधार में आर्थिक संकल्पना रही है। अर्थात् भूमंडलीकरण की मूल संकल्पना व्यापार, बाद में विदेशी निवेश आदि द्वारा सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक तथा सांस्कृतिक व्यवस्था पर कब्जा कर लिया जाता है। आगे यह संकल्पना आपनी समन्वय, सामंजस्य तथा आदान–प्रदान के माध्यम से एक मंच निर्माण करने की प्रक्रिया है। इन सभी में भाषा का योगदान अत्यधिक महत्त्व रखता है। भूमंडलीकरण के परिप्रेक्ष्य में हिंदी एक नई भूमिका के रूप में उभरती है। भारत में आज भी हिंदी की भूमिका लोकशक्ति और राजशक्ति दोनों के बीच हिचकोले खाती हुई अपना संतुलन बनती है। वस्तुतः गणतांत्रिक भारत का संविधान हिंदी को संघ सरकार की राजभाषा के रूप में अधिकार प्रदान करता है। ऐसा होते हुए भी अंग्रेजी मानसिका हिंदी को पूर्णरूपेण फलने–फूलने नहीं देती है। हिंदी की बुनियादी नींव लोकशक्ति है। और लोकशक्ति ही उसका स्वभाव है, जिसे वह छोड नहीं सकती है। इसी में ही हिंदी का विकास निहित है। साथ ही हिंदी के प्रसार और विकास की ताकत उसके मिश्रित स्वभाव में छिपी हुई है। संस्कृत तत्सम शब्दावली से आगे बढती है। उर्दू को अपनाती हुई समस्त भारत के उपमहाद्वीपों में बोली तथा समझी जाती है। साथ ही देश–विदेश की भाषाओं में अपनी

पहचान कायम करने का सामर्थ्य रखती है। अत: भूमंडलीकरण के योगदान में नि:संदेह अपनी व्यापकता खडी करती है।

कोई भी भाषा मात्र अभिव्यक्ति का साधन ही नहीं, बल्कि उसमें मनुष्य की अस्मिता के स्वर पनपते हैं। उसमे सामाजिक, सांस्कृतिक चेतना की अभिव्यक्ति भी रूपायित होती है। जिससे उसमें परिवर्तनों–परिवर्धनों की अनुगूँज ध्वनित हो उठती है। "सामान्यत: किसी भाषा के वर्चस्व की वृद्धि या ऱ्हास राजनैतिक या व्यापारिक कारणों से घटित होता है। इतिहास इस बात का साक्षी है कि अक्सर साम्राज्यवादी प्रवृत्तियाँ भाषाओं के विस्तार में सहायक रही हैं। इनके विपरीत 'संस्कृत' और 'हिंदी' जैसी भाषाओं का लक्ष्य प्राय: ज्ञान की प्राप्ति और अज्ञान से मुक्ति ही रहा है, जैसा कि प्रसिद्ध उपनिषद वाक्य 'ऋते ज्ञानान्नमुक्ति:' में अभिव्यक्त है। अंग्रेजी प्रभुता की भाषा थी, जो एक साम्राज्य से शक्ति पाती थी और उसके लिए यह स्वाभाविक था कि वह ज्ञान–विज्ञान की आधिकारिक भाषा का रूप लेती। हिंदी को राजभाषा स्वीकार करने पर भी अंग्रेजी का प्रभुत्व कई कारणों से बरकरार है। प्रशासन में अंग्रेजी का प्रचलन, अंग्रेजी की अंतर्राष्ट्रीय छवि। उससे जुडा एक आभिजात्य का भाव और जीविका को अधिक संभावना इनमें प्रमुख हैं। फिर शासकीय व्यवस्था की उदासीनता के बावजूद शिक्षा, व्यापार, मनोरंजन और संचार के क्षेत्रों में हिंदी की महत्तवपूर्ण उपस्थिति को नकारा नहीं जा सकता है।"[२] तात्पर्य यह है कि हिंदी मात्र हिंदी भाषा नहीं, बल्कि भारत और भारतीयता का पर्याय–सा की प्रतीति अभिव्यक्त करती है। उन्हीं द्वारा ही भारतीय परम्परा और जीवन के जीवन की जीवंतता साक्षात होकर संभव हो उठते हैं।

विदित है कि प्रवासी भारतियों द्वारा हिंदी का अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर विकास में अविस्मरणीय योगदान रहा है। आजादी संग्राम में हिंदी की नि:संदेह महत्तवपूर्ण भूमिका रही है। वह केवल भारत के एक विशाल भू–भाग में सीमित नहीं रही है। आज हिंदी ने अपना दायरा काफी फैला दिया है। मॉरीशस, सूरीनाम, सिंगापूर, गयाना, फीजी, दक्षिण अफ्रीका, थाईलैंड, अमरिका तथा इंग्लैड आदि अनेक देशों में हिंदी ने अपने पैर पसार दिए हैं। वहाँ पर हिंदी भाषियों की उल्लेखनीय संख्या विदयमान हैं। अर्थात् हिंदी विदेशी भूमि पर केवल भाषा के रूप में नहीं, बल्कि भारत की भाषा–संस्कृति आदि की जीवन्नता के रूप में अपनी पहचान रखती है, यह बात स्पष्ट होती है।

वस्तुत: साहित्य समाज का दर्पन ही नहीं, बल्कि एक्स–रे होता है। उसमें प्रत्यक युग के समाज की स्थिति, दशा आदि का साहित्य तथा उसकी भाषा पर प्रभाव देखा जा सकता है। उसे विविध दृष्टि से देखा जा सकता है। अत: विज्ञान एवं तकनीकी विशेष महत्त्व रखते हैं। उसके सहारे समूची दुनिया एक वैश्विक गाँव के रूप में प्रतीत होती है। परिणाम स्वरूप अभूतपूर्व परिवर्तनों की पराकाष्ठा स्पष्ट होती है। आज का युग ता सूचना क्रांति का युग है। उसमें इलेक्ट्रॉनिक मीडिया और प्रिंट मीडिया के माध्यमोंका गतिविधियों को देखा जा सकता है। इसी परिप्रेक्ष्य में समाचार एव उनका दायित्व अत्यधिक महत्त्व रखता है। अर्थात् मीडिया की उपस्थिति का आभास विश्व स्तर पर पाया जाता है। यह सब सशक्त, सबल भाषा द्वारा ही संभव है। यही सामर्थ्य हिंदी भाषा में स्पष्ट रूप से नजर आता है। इस बात को नकारा नहीं जा सकता है।

वर्तमान में वैश्विक स्तर पर हिंदी की स्वीकार्यता और व्याप्ति अनुभव की जा सकती है। रेडियो, दूरदर्शन, इंटरनेट, डिजिटल टेक्नॉलाजी आदि द्वारा हिंदी भाषा वैश्विक धरातल के शिखर पर पहुँची है। मानो यह आवश्यकता का अविष्कार ही प्रतीत होता है। "सूचना समाचार–क्रांति की भाषा हिंदी है, हिंदी ही रहेगी और अंतत: यह अंग्रेजी को धीरे–धीरे अपदस्थ करके उसकी जगह लेगी ही। यह उद्घोषणा करना हमारा भाषा–प्रेम ही नहीं, बल्कि विकसित और विस्तारित होती सूचना–क्रांति के अध्ययन, पर्यवेक्षण और आकलन के समाजशास्त्रीय आँकडे बोल रहे हैं। आज भारत और चीन विश्व की सबसे तीव्र गति से उभरनेवाली अर्थव्यवस्थाओं में से हैं तथा विश्व–स्तर पर इनकी स्वीकार्यता और महत्ता स्वत: बढ रही है। जब किसी राष्ट्र को विश्व बिरादरी अपेक्षाकृत ज्यादा महत्त्व और स्वीकृति देती है तथा उसके प्रति अपनी निर्भरता में इजाफा पाती है तो उस राष्ट्र की सारी चीजें स्वत: महत्तवपूर्ण बन जाती हैं। ऐसी स्थिति में भारत की विकासमान अंतर्राष्ट्रीय हैसियत हिंदी के लिए वरदान–सदृश्य है।"[३] तात्पर्य यह है कि वैश्विक परिवेश में हिंदी भाषा की हैसियत काफी उन्नयन कर रही है। यह राजभाषा, राष्ट्रभाषा से विश्वभाषा के स्तर को स्पर्श करने प्रक्रिया ही साबित होती है।

हिंदी भाषा का प्रचार–प्रसार, तकनीकी एवं प्रौदयोगिकी क्षेत्रों में हिंदी की भूमिका, विश्व पटल पर हिंदी की अलग पहचान, प्रयोगधार्मिता, भाषागत संरचना के नित नए आयाम आदि व्यापक अभियान द्वारा भारतीय भाषाएँ तथा हिंदी अंतर्राष्ट्रीय स्तय पर विशेष पहल कर रही है। निश्चय ही तेजी से बदलते संसार में, भूमंडलीकरण के परिप्रेक्ष्य में हिंदी भाषा का विकास अनिवार्य–सा बनता जा रहा है। रचनात्मक साहित्य की दृष्टि से देखा जाय, तो गुणवत्ता एवं मात्रा में हिंदी भाषा वैश्विक समृद्धि पाती है। उन्हें विकास के काफी

अवसर उपलब्ध है। अत: भूमंडलीकरण के दौर में हिंदी भाषा का योगदान अपने महत् मायने रखता है।

संदर्भ :

[१] सम्या, डॉ. प्रदीप कुमार सिंह, भूमंडलीकरण के परिप्रेक्ष्य में साहित्य, समाज, संस्कृति और भाषा पृ. सं. १९–२०
[२] सम्या, डॉ. प्रदीप कुमार सिंह, भूमंडलीकरण के परिप्रेक्ष्य में साहित्य, समाज, संस्कृति और भाषा पृ. सं. २२
[३] सम्या, डॉ. प्रदीप कुमार सिंह, भूमंडलीकरण के परिप्रेक्ष्य में साहित्य, समाज, संस्कृति और भाषा पृ. सं. ३४२

Aayushi International Interdisciplinary Research Journal
ISSN 2349-638X
www aiirjournal.com